❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

यज्ञ संबन्धित जानकारी प्राप्त करने के लिए
7428894020 मिस कॉल करें
thearyasamaj .org

वर्ष 47, अंक 9 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 15 जनवरी, 2024 से रविवार 21 जनवरी, 2024
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 200 पृष्ठ 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें-www.thearyasamaj.org/aryasandesh

200 वीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती 1824-2024

ऐतिहासिक, अदभुत, अनुपम और अद्वितीय

200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव

10-11-12 फरवरी, 2024 : टंकारा

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू जी भारत राष्ट्र की ओर से कृतज्ञता ज्ञापित करेंगी

आर्य समाजें एवं आर्य संगठन उपरोक्त तिथियों में अपना कोई भी बड़ा आयोजन न रखकर स्थानीय महानुभावों को स्क्रीन लगाकर आर्यसन्देश टीवी पर लाइव दिखाएं

आयोजन की व्यवस्थाओं को सफल और सुव्यवस्थित बनाए रखने के लिए समस्त आर्य महानुभाव अपने सब साथियों सहित

www.thearyasamaj.org

पर अपना पंजीकरण अवश्य करायें

200वीं जयन्ती के स्मरणोत्सव को सफल बनाने में अहम् भूमिका निभाएं : समस्त आर्यजन, आर्यसमाजें एवं संस्थान आर्थिक रूप से अपनी कुछ-न-कुछ आहुति अवश्य ही प्रदान करके सहयोग करें।

- अन्य सम्बन्धित जानकारी एवं सूचनाएं पृष्ठ 4-5 एवं 7-8 पर

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती - ज्ञान ज्योति पर्व - स्मरणोत्सव :10-11-12 फरवरी, 2024

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्य संगठनों से अधिकाधिक आर्थिक सहयोग की अपील

मान्यवर, सादर नमस्ते !

आशा है आप सपरिवार स्वस्थ व प्रसन्न होंगे।

जैसा कि आप जानते ही हैं कि प्रधानमन्त्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर-कमलों से दिनांक 12 फरवरी, 2023 को दिल्ली के इन्दिरा गांधी इण्डोर स्टेडियम से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के द्विवर्षीय विश्वव्यापी भव्य आयोजनों का शुभारम्भ हुआ था। जिसमें उन्होंने 2025 में आर्यसमाज के 150वें स्थापना दिवस एवं 2026 में स्वामी श्रद्धानन्द जी की बलिदान शताब्दी मनाने का लक्ष्य भी हमें दिया था।

किसी महापुरुष की जन्म की द्विशताब्दी के आयोजनों में सम्मिलित होना सबके लिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि ऐसे आयोजनों में सम्मिलित होने का अवसर सबके जीवन में प्राप्त नहीं होता। ऐसा ही अवसर हम सबके समक्ष **'महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव'** के रूप में उपस्थित हुआ है। 200वीं जयन्ती का तीन दिवसीय विशेष आयोजन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म स्थान **'टंकारा' जिला-मौरवी** (गुजरात) में **10-11-12 फरवरी, 2024** को आर्यसमाज के केन्द्रीय संगठन एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से बहुत ही शानदार एवं भव्य रूप से आयोजित किया जा रहा है।

अत: आपसे अनुरोध है कि आप इस सूचना को आर्यसमाज के नोटिस बोर्ड पर अंकित करने की कृपा करें और सुनिश्चित करें कि हमारा पूरा परिवार, आर्य समाज के समस्त सदस्यगण, सदस्यों के परिवार और वे परिवार जिनका किसी भी रूप में आर्यसमाज की विचारधारा से कैसा भी सम्बन्ध रहा है, उनको भी समारोह में आमन्त्रित करें और प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्यसमाज/संगठन की ओर से बसों की व्यवस्था करके अथवा भारतीय रेल के माध्यम से लाखों की संख्या में अवश्य ही पहुंचें।

इस 200वें स्मरणोत्सव की विशाल व्यवस्थाओं के लिए आपका आर्थिक सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: आपसे निवेदन है कि आप अपने आर्यसमाज/संस्थान एवं परिवार की ओर से कुछ-न-कुछ सहयोग राशि प्रदान करने की कृपा करें और आर्यसमाज के सदस्यों, परिचितों, इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें। कृपया अपनी सहयोग राशि **'महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा'** के नाम भेजें। धन्यवाद सहित

-: निवेदक :-

सुरेशचन्द्र आर्य	सुरेन्द्र कुमार आर्य	पद्मश्री पूनम सूरी	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	योगेश मुंजाल	अजय सहगल
प्रधान	अध्यक्ष	प्रधान	प्रधान	महामन्त्री	कार्यकारी प्रधान	मन्त्री
सार्वदेशिक आ.प्र. सभा	ज्ञान ज्योति महोत्सव समिति	आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)		महषि दयानन्द स.स्मारक.ट्र., टंकारा	

देववाणी-संस्कृत

आत्मा पवित्र है !

वेद-स्वाध्याय

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भइव सुधितो गर्भिणीषु।
दिवेदिव ईडयो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः।। -ऋक्. 3/29/2
ऋषिः **विश्वामित्रः।।** देवता - **अग्निः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **जातवेदाः** = ज्ञान व ऐश्वर्य वाला अग्नि **अरण्योः** = अरणियों में **निहितः** = छिपा हुआ होता है और यहा वहाँ **गर्भिणीषु गर्भः इव** = गर्भिणियों में गर्भ की भाँति **सुधितः** = अच्छी प्रकार धारित, सुरक्षित होता है। **अग्निः** = यह अग्निदेव **जागृवद्भिः** = जागनेवाले, ज्ञान युक्त **हविष्मद्भिः** = हविवाले, आत्म त्यागी **मनुष्येभिः** = मनुष्यों द्वारा तो **दिवेदिवे** = प्रतिदिन ही **ईडयः** = पूजित व प्रार्थित होता है।

विनय - तुम कहते हो कि आत्मा दिखाई नहीं देता, पर यदि तुम इसे देखना चाहते हो तो तुम इस आत्माग्नि को प्रज्वलित क्यों नहीं कर लेते? अरणि में या दियासलाई में विद्यमान भौतिक अग्नि भी तो तबतक दिखलाई नहीं देता जबतक कि मन्थन (रगड़ने) प्रणव (ईश्वर नाम) रूपी (दिया सलाई की) डिब्बी या उत्तरारणि पर ध्यानरूपी मन्थन करके देखो, तो तुम देखोगे कि तुम्हारा आत्माग्नि चमक उठेगा, जातवेदा जाग उठेगा। अरे! योगरूपी अरणी और स्वाध्यायरूपी उत्तरारणि के सम्बन्ध से तो अन्तः करण में परमात्मा तक प्रकाशित होती है, अतएव इस आत्मज्योति की इस समय इतनी अच्छी तरह रक्षा करनी चाहिए, जैसेकि गर्भिणी स्त्री अपने गर्भ की रक्षा करती है, पर क्या हम अपने इस ज्ञानगर्भ की कुछ रक्षा करते हैं? नहीं, यह सब हम न जानते हुए बड़े भारी गर्भपात के पापभागी हो रहे हैं। जैसे माता-पितारूपी अरणियों से प्रकट हुई सन्तानरूपी अग्नि प्रारम्भ में गर्भावस्था में होती है, वैसे ही हम सब मनुष्य-शरीर पानेवालों के अन्दर जन्म से आत्मज्योति गर्भित रहती है जोकि हममें जीव के मनुष्य-योनि-सम्बन्ध से उत्पन्न हुई है, पर हम लोग इस गर्भित 'सुधित' ज्योति को पालित-पोषति कर बढ़ाने की जगह भोगादि में पड़कर इसे दबा करते हैं! पुण्यात्मा हैं वे पुरुष जो इस गर्भित आत्मज्योति को बढ़ाकर इस द्वारा अपने-आपको जगाते हैं, ज्ञानोपार्जनरूपी समिदा धानों से इस शिशु-अग्नि को प्रज्वलित करते हैं और 'जागृवत्' होते हैं तथा जो घृताहुतिरूपी आत्मबलिदानों को दे-देकर इस अग्नि को प्रचण्ड भी कर लेते हैं, 'हविष्मत्' होते हैं। संसार के महात्माओं को देखो, इन्होंने इसी प्रकार अपने में जातवेदा की चिनगारी को इतना बढ़ाया है कि वे आज सब-कुछ भस्म कर सकने वाले महानल हो गये हैं, महाशक्ति, महात्मा हो गये हैं। ये देखो! जागृवान्, हविष्मान् मनुष्य अपनी इस प्रज्वलित आत्माग्नि का प्रतिदिन भजन-स्तवन कर रहे हैं, इसे और-और बढ़ा रहे हैं। इनके अन्दर ये आत्मदेव निरन्तर ज्ञानों और बलिदानों द्वारा पूजित और पोषित हो रहे हैं, उठो मनुष्यो! तुम भी अपनी आत्माग्नि को बढ़ाओ और जागृत् होकर तथा हवि हाथ में लेकर इस आत्माग्नि को नित्य अधिक-से-अधिक प्रदीप्त करते जाओ।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 3 का शेष

अलंकृत हुआ था? ऋषि दयानन्द की दयाबल बली भुजाओं ने उसे अस्पृश्यता की गहरी गुहा से उठाया और आर्यत्व के पुण्य शिखर पर बैठाया था।

गो रक्षा - ऋषि का करुणाक्षेत्र मनुष्य जाति तक परिमित नहीं था। प्राणिमात्र दयानन्द की दया के पात्र थे। ऋषि ने गो-रक्षा के लिए भरसक प्रयत्न किया। एक निवेदन पत्र पर हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सब के हस्ताक्षर कराए कि गो हत्या राजनियम से बन्द की जाए।

ऋषि ने अपने नाम को सार्थक किया, जब दातारपुर के बाहर सड़क पर जाते हुए एक बैल गाड़ी कीचड़ में धंसी देखी। गाड़ीवान का और बस न चलता बैलों पर कोड़े बरसाता चला जाता था। बैलों ने बहुतेरी गर्दनें हिलाई, कंधों पर बहुतेरा दबाव डाला, पर गाड़ी न खिंची। गाड़ीवान हार कर रह गया। ऋषि को अधिक दया गाड़ीवान पर आई या बैलों पर यह कहना कठिन है। दोनों के हृदय कृतज्ञताभार से आभारी थे जब राजों महाराजों के गुरु लोकमान्य दयानन्द ने स्वंय कीचड़ में उतर बैलों का जुआ अपनी गर्दन पर डाला और जो भार दो बैलों से न खींचा था, अकेले अपने भुजाबल से जोहड़ से बाहर कर दिया।

ऋषि की लीला बहुपक्षी लीला है। जिस पक्ष पर दृष्टि डालो। वही कहता है, मैं सबसे मीठा हूँ। वस्तुतः गुड़ जहाँ से खाओ मीठा लगता है। इस लीला के अवसान में भी वह महत्व है जो और मनुष्यों के जीवन में नहीं।

प्रचार की धुन - ऋषि दयानन्द ने अन्तिम यात्रा जोधपुर की ओर की इस समय तक ऋषि ने बीसयों आर्य समाजों की स्थापना कर ली थी। पंजाब, पश्चिमोत्तर (वर्तमान संयुक्त) प्रान्त राजपुताना, यह सब प्रदेश चरणों में सिर झुका चुके थे। कितने राजपूत नरेश शिष्य बन चुके थे। जोधपुर में भी महाराज ने बुलाया था। चरण सेवकों ने विनय की, वहाँ के लोग क्रूर स्वभाव के पुरुष है, आप की 'शिक्षा का गौरव नहीं समझेंगे। संभव है प्राणों के बैरी हो जाएं। दयावीर दयानन्द ने उत्तर दिया-'तभी तो जाता हूँ। बिगड़े के सुधार की और अधिक आवश्यकता है। रही मेरे प्राण-घात की बात, सो तो यदि मेरी उंगली-उंगली से बती का काम लिया जाए, और इसी से किसी को सीधा रास्ता सूझ जाए तो मेरे जीवन का प्रायोजन इसी बात में सिद्ध हो गया।' कहने की आवश्यकता नहीं कि स्वामी के पहुँचते ही राजा चरणों का भक्त हो गया, प्रजा अनुराग रक्त हो गई। प्रतिदिन आनन्द वर्षा होने लगी।

निर्भयता - एक दिन राजा ने महाराज को अपने डेरे पर निमंत्रित किया ऋषि बिना सूचना दिए वहाँ जा पहुंचे। राजा के दरबार में उसकी प्यारी वेश्या नन्ही जान आई हुई थी। राजा खिसियाने हुए उसे पालकी में बैठा तो दिया परन्तु ऋषि से आँखें चार न हो सकीं। ऋषि यह कुत्सित दृश्य देखकर लाल हो गए। गरजकर कहा-सिहाँ की गोद में कुत्तियों का क्या काम?

दया आदर्श - यह निर्भयता ऋषि के लिए भय सिद्ध हुई। विरोधियों ने दल बना लिया। कुछ दिनों में ही जगन्नाथ रसोइए को घूस देकर वीतराग योगीराज को विष दिलवा दिया। ऋषि ने उस समय भी अपनी स्वाभाविक दया से काम लिया। जगन्नाथ ने स्वंय माना, ऋषिवर! यह अपराध मुझ से हुआ है। ऋषि ने उसे धन दिया और आग्रह-पूर्वक कहा कि शीघ्र आँगल राज्य से बाहर हो जाओ जिस से तुम्हारे प्राणों पर संकट न आए।

विष का प्रभाव धीरे धीरे हुआ। दस्त आने लगे। पेट का शूल बढ़ता गया। बार बार मूर्छा होने लगी। महीना भर यह क्लेश रहा। वैद्य चकित थे कि इस वेदना में ऋषि सन्तोष पूर्वक जी रहे हैं। यह ऋषि का चमत्कार था।

देहावासन - जोधपुर से आबू और आबू से अजमेर गए। दीवाली की साँयकाल को, जहाँ घर बली बाज़ार में दीपक जलाए गए यह जाति-कुंस-दीम, संसारं समुद्र को ज्योति स्तम्भ देखते-देखते जगमगाती चकाचौंध से धुंधयाती रात्रि में अन्तर्हित हो गया देखने वालों ने देखा कि बुझते दीपक ने संभाल लिया। मृत्यु समय समीप आया देखकर ऋषि सचेत हुए। क्षौर कराया शरीर पोंछवाया, चनों का रस लिया, प्रभु का भजन, मन्त्रों का पाठ करते रहे। अन्त में 'परमेश्वर! तैने अच्छी लीला की, तेरी इच्छा पूर्ण हो। यह शब्द कहे और अत्यन्त आहनाद पूर्वक प्राण त्याग दिए।

देह छोड़ते समय दयानन्द के मुख पर एक विचित्र कान्ति थी। पूर्ण किये कर्तव्यों का सन्तोष छाती को उभारे हुए था जगज्जनक की गोदी में परमपिता का प्यारा पुत्र लालायित हृदय साथ लिए लौट रहा था। पिता की आज्ञा का पालन किया है, यह आह्लाद था, शान्ति थी, सन्तोष था।

दृष्टि रासायण - जीवन प्रचार में अर्पण हुआ था, मरण भी प्रचार का साधन हुआ! गुरुदत्त एम.ए. पंजाब यूनिवर्सिटी में प्रथम रहे थे, उनकी यह ऋषि से प्रथम भेंट थी। बातचीत नहीं हुई शंका समाधान नहीं हुआ, प्रश्नोत्तर का अवसर नहीं मिला, परन्तु चंचल, शंका का अवतार तर्क-मूर्त, गुरूदत्त ऋषि पर आसक्त है। उसे को सन्देह नहीं रहा, क्षणमात्र में उनकी काया पलट हो गई । एक दृष्टि ने कुछ का कुछ कर दिया।

ऋषि की दृष्टि रात्तायण है। आओ! उस दृष्टि के दर्शन करो। खोटा सिक्का है? लाओ, खरा सोना हो जायेगा ऋषि के जीवन के अध्ययन से शिक्षा लाभ करो। उनके ग्रंथों को पढ़ो और उनके जीवन का मिलान उनके लेखों से करो। भर्तृहरि ने कहा है-

मनस्येक वचस्येक कर्मण्येक महात्मानाम् ।

यह वाक्य ऋषि दयानन्द के महत्व का सार है।

अमर दयानन्द - आज केवल भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक संसार पर दयानन्द का सिक्का है। मतों के प्रचारकों ने अपने मन्तव्य बदल लिए हैं, धर्मपुस्तकों के अर्थों का संशोधन किया है, महापुरुषों की जीवनियों में परिवर्तन किया है। स्वामी जी का जीवन इन जीवनियों में बोलता है ऋषि मरा नहीं करते, अपने भावों के रूप में जीते हैं। दलितोद्धार का प्राण कौन है? पतित पावन दयानन्द।

समाज सुधार की जान कौन है? आदर्श सुधारक दयानन्द। शिक्षा प्रचार की प्रेरणा कहां से आती है? गुरुवर दयानन्द के आचरण से।

वेद का जय जयकार कौन पुकारता है? ब्रह्मर्षि दयानन्द। देवी सत्कार का मार्ग कौन दिखाता है? देवीपूजक दयानन्द। गोरक्षा के विषय में प्राणिमात्र पर करुणा दिखाने का बीड़ा कौन उठाता है? करुणानिधि दयानन्द।।

आओ। हम अपने आपको ऋषि के रंग में रंगें। हमारा विचार ऋषि का विचार हो, हमारा आचार ऋषि का आचार हो, हमारा प्रचार ऋषि का प्रचार हो। हमारी प्रत्येक चेष्टा ऋषि की चेष्टा हो। नाड़ी - नाड़ी से ध्वनि उठे :-

महर्षि दयानन्द की जय!
पापों और पाखण्डों से,
ऋषिराज छुड़ाया था तूने।
भयभीत निराश्रित जाति को,
निर्भीक बनाया था तूने ।।
बलिदान तेरा था अद्वितीय,
हो गई दिशाएं गुञ्जित थी।
जन जन को देगा प्रकाश
वह द्वीप जलाया था तूने ।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती पर शत-शत नमन। आओ उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का संकल्प लें।

200वीं जयन्ती के अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का पुण्य स्मरण कराता पं. चमूपति जी का लेख

महर्षि दयानन्द सरस्वती का दर्शन

जन्म व शिवरात्रि – ऋषि दयानन्द की जन्म भूमि होने का गौरव गुजरात प्रान्त को है। पिता जन्म के ब्राह्मण थे, और भूमिहारी तथा जमीदारी का कार्य करते थे। शिव के बड़े भक्त थे, शिवरात्रि के दिन बालक को मन्दिर ले गए और उसे उपवास करा जागरण का आदेश दिया। जब बड़े-बड़े शिव-भक्त सो गए, यह भावी ऋषि प्रयत्न पूर्वक जागता रहा। गीता के कथनानुसार :-

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।

इनके हृदय में भक्ति का नया सूर्य उदय हुआ था। यह इसी रात में शिव को रिझा देना चाहते थे। नींद आती पर यह पानी की छींटों से उसे दूर भगाते। इतने में एक चूहे ने सचेत किया। उस क्षुद्रपशु की महान पशुपति के आगे उद्धत होता देखकर विचार आया हो न हो यह शिव नहीं। दूसरों का व्रतभंग आलस्य ने किया था इनका तर्क ने। तर्क जीवन की भूमिका था, आलस्य मौत की! शिवरात्रि बीत गई, परन्तु शिवरात्रि की घटना हृदय में गड़ सी गई ।

मृत्यु के दृश्य – मूलशंकर के बढ़ते यौवन को दूसरी चेतावनी अपने चाचा और भगिनी की मृत्यु से मिली। चाचे के लाडले थे, उनका वियोग सहा न जाता था भगिनी को महामारी ने मारा। इन दो मृत्युओं का प्रभाव एक-सा नहीं हुआ। प्रथम मृत्यु पर आश्चर्य चकित रहे और पाषाण हृदय की उपाधि पाई, दूसरी पर बिलख-बिलख कर रोए।

मूलशंकर की शिक्षा का प्रबन्ध इनके बाल्यकाल में किया गया था। इन्हें यजुर्वेद कण्ठस्थ था और भी बहुत कुछ पढ़ा पिता को पता लगा कि बालक पर वैराग्य का भूत सवार है। महात्मा बुद्ध के पिता की तरह इन्हें विवाह के डोरों में फांसने की ठानी परन्तु ठीक विवाह की रात्रि को मूलशंकर घर से लुप्त हो गये।

वन-यात्रा – मूलशंकर की वनयात्रा की कथा बहुत लम्बी है। पहले तो किसी ने ठग लिया। इन्हें शुद्ध चेतन नाम देकर नैष्ठिक ब्रह्मचारी बनाया। फिर यह संन्यासी हुए और दयानन्द नाम पाया। योगियों के पास योग साधन सीखते रहे। समाधि का आनन्द लाभ किया। गिरिगुहाओं में घण्टों बिताए। पुस्तकें खोजीं और उनका अध्ययन किया। मैदानों में सोए, वृक्षों की शाखाओं में विश्राम किया। मूल कन्द खाकर भूख मिटाई । सार यह कि पूर्ण वनचर का सा जीवन व्यतीत किया।

गुरु विरजानन्द के चरणों में – 36 वर्ष से ऊपर के थे जब दंडी विरजानन्द के द्वार पर विद्या-वित्त के भिक्षु हुए। वहाँ पहली भेंट यह धरनी पड़ी की जो पुस्तक पढ़ें हैं सब यमुना को अर्पण करो। हाथ लिखे पुस्तक बड़ी कठिनता से हाथ आए थे। पर गुरु-मुख का उपदेश भी तो सुलभ न था। जी कड़ा किया और गुरु की आज्ञा पालन की। आदर्श शिष्य आदर्श गुरु के चरणों में आदर्श शिक्षा प्राप्त कर रहा था। नित्य प्रति यमुना के जल से गुरुजी को स्नान कराते। कुटी में झाड़ू देते। सेवा शुश्रुषा करते। गुरु ने एक दिन डण्डे से ताड़ाना की, यति-वर ने गुरु-गौरव का प्रसाद मान स्वीकार की। अन्त में दीक्षान्त का समय आया। निर्धन ब्रह्मचारी गुरु दक्षिणार्थ लोगों की भीख माँग लाया। हा दैव! स्वीकार न हुई। क्या भेंट धंरू ?" जो तुम्हारे पास हो, 'मेरे पास अपने सिवा कुछ नहीं"। 'तो अपना आप भेंट धरो' – भेंट धरी गई। गुरु ने अंगीकार की। 'वही आपकी भेंट मानो आर्य समाज की स्थापना का प्रथम बीज थी। दयानन्द विरजानन्द का हुआ और विरजानन्द के हाथों सारे संसार का।

पाखण्ड-खण्डनी – अब पुष्कर के मेले में दयानन्द पहुंचता है, कुम्भ के महोत्सव में दयानन्द गरजता है। वेद से उलटे जाते वैदिक धर्मियों को वेद के पथ पर लाना चाहता है। एक ओर सारी भ्रान्त आर्य जाति है, दूसरी ओर अकेला दण्डकारी दयानन्द। 'पाखण्ड-खण्डनी पताका के नीचे खड़ा कौपीनधारी ब्रह्मचारी आते जाते के लिए अचम्भा था। लोग कहते थे, गंगा के प्रवाह को रोकने का सामर्थ्य इसमें कहाँ? स्वयं भागीरथ आएं तो न रोक सकें।

तपस्या की पराकाष्ठा – ऋषि गरज गरज कर हार गए। गंगा बहती गई और उसके साथ हिन्दू भ्रान्तियों का प्रवाह भी बहता गया। ऋषि ने डेरा डण्डा उठाया और वनों की राह ली। पूर्ण वीतराग होने का व्रत किया कि कौपीन के अतिरिक्त कोई चीज़ पास न रखेंगे। महाभाष्य की एक प्रति पास थी, सो भी गुरुवर की सेवा में भेज दी। इसी कौपीन में दयानन्द सोते, इसी में फिरते। नहाकर इसे सूखने को डालते और स्वयं पद्मासन लगा कर बैठ रहते। हिमाच्छन्न नालों में क्या और जलती रेतों पर क्या दयानन्द का यही पहरावा रहा।

शास्त्रार्थ – कोई दो वर्ष तक दयानन्द ने इस प्रकार तितिक्षा में काटे फिर प्रचार में प्रवृत हुए। शास्त्रार्थ पर शास्त्रार्थ करते चले गए। हीरा वल्लभ नाम के एक प्रौढ़ पण्डित ने सप्ताह भर संस्कृत में शास्त्रार्थ किया। उनका संकल्प था कि ऋषि से मूर्ति को भोग लगवा कर उठूँगा। ऋषि का पक्ष सुनकर ठाकुर जी को उठाकर गंगा में प्रवाहित किया और मुक्तकंठ से माना कि मूर्ति पूजा शास्त्र के विरूद्ध है।

ऋषि के उपदेश में जादू था। कंठियां उतरवा दीं, मूर्तियां फेंकवा दी, तिलक छाप की रीति मिटा दी। गायत्री का प्रचार किया संध्या लिख लिख कर बांटी। स्त्रियों को मंत्रजाप का अधिकार दिया। जाटों राजपूतों को यज्ञोपवीत पहनाए।

आर्य धर्म की जय – चान्दपुर के शास्त्रार्थ में ऋषि ने आर्य जाति के इतिहास में एक नए युग का बीजारोपण किया, आर्य आर्य तो आपस में विवाद करते ही थे। मुसलमानों, ईसाइयों से इनकी कभी न ठनी थी। इस से पूर्व प्रथा यह थी कि अहिन्दू हिन्दुओं का खंडन करें और हिन्दू चुप रह कर सहन करते जाएं। आर्य धर्म आटे का दिया था। कच्चा तागा था, ऋषि ने इस भ्राँति को मिटा दिया। तीन दिन बाद होना था जिसमें मौलवियों और पादरियों के विरुद्ध ऋषि ने आर्य धर्म का पक्ष लेना स्वीकार किया था। एक ही दिन में ऋषि ने आर्य धर्म की स्थापना ऐसी दृढ़ता से की कि दूसरे दिन वहाँ प्रतिपक्षियों का चिन्ह मात्र भी शेष न था। आर्य धर्म की यह विजय धर्म के इतिहास में स्वर्णअक्षरों में लिखने योग्य है।

अन्य मतों पर कृपा – ऋषि ने ईसाईयों को निमन्त्रण दिया, मुसलमानों को निमन्त्रण दिया कि आर्य धर्म को परखो और स्वीकार करो इस निमन्त्रण में मोहिनी शक्ति थी। सर सैयद ऋषि के चरणों में आते। पादरी ऋषि के दर्शन करते। पादरी को ऋषि 'भक्त स्काट' कहते। 'भक्त' की अनुपम उपाधि किसी आर्य समाजी को न मिली, एक सा ऋषि भक्ति का अपूर्व प्रसाद ले गया। मुहम्द उमर जन्म का मुसलमान था उसे स्वामी ने अपने हाथों आर्य बनाया और अलखधारी नाम रखा। सारे संसार के लिए आर्य धर्म का द्वार खोलने का श्रेय वर्तमान युग में स्वामी दयानन्द ही को है। कर्नल अल्काट और मैडमब्लवैटस्की अमेरिका से चल कर स्वामी दयानन्द के चरणों में आए। अपने पत्रों में ऋषि को 'गुरुदेव' कह कर सम्बोधित करते थे।

बन्धन काट डाला – एक दिन एक ब्राह्मण ने पान का बीड़ा ला दिया। चबाने से प्रतीत हुआ इसमें विष है। ऋषि उठे गंगा पास थी, उस पर जाकर न्योली कर्म किया और विष निकाल दिया। सैयद मुहम्मद तहसीलदार था उसने दोषी को पकड़वाया और दयानन्द के दरबार में ले गया। ऋषि से सहा न गया कि किसी को उनके कारण बंधन में डाला जाए। क्या दया पूर्ण उत्तर दिया, 'मेरा काम बंधन काटना है, बंधन बढ़ाना नहीं।'

बाल ब्रह्मचारी के बल – ऋषि जिस धर्म का प्रचार करना चाहते थे वह उनके जीवन में मूर्त रूप में विद्यमान था। दयानन्द का सबसे बड़ा बल ब्रह्मचर्यबल था। बाल ब्रह्मचारी को अधिकार था कि व्यभिचारियों को डाँटे। विक्रमसिंह ने ब्रह्मचर्यबल का प्रमाण चाहा तो उसकी दो घोड़ों की गाड़ी एक हाथ से पकड़ कर रोक दी। साईस बल लगाता है, घोड़े यत्न करते है, परन्तु गाड़ी हिलने में नहीं आती। पीछे की ओर देखा ऋषिवर गाड़ी रोके खड़े हैं। शरीर से तेज बरसता है। मुख कान्ति टकटकी लगाकर देखी नहीं जाती।

देवी पूजा – ब्रह्मचारी हैं और देवियों का आदर करता है। एक नन्ही लड़की को बालकों के साथ खेल रही है, ऋषि देखते ही सिर झुका देते हैं। देखने वालों को धोखा है कि सामने खड़े वृक्ष को प्रमाण किया है, देवता-निन्दक को देवता की परोक्ष शक्ति ने देवता पूजक बताया है। ऋषि के मुख से सुनना ही था कि 'वह देखो! वह नन्ही बालिका मूर्त मातृ शक्ति है'। बस! सभी के मुख से निकला "धन्य! धन्य!! देवियों के सत्कार स्वरूपबाल ब्रह्मचारी दयानन्द ! धन्य इस एक घटना में दयानन्द के देवियों के प्रति संपूर्ण भावों का मूर्त चित्र चित्रित है। देवियों की शिक्षा हो और शिक्षा के साथ पूजा हो यह सूत्र ऋषि के देवी सम्बन्धी सिद्धान्त का सार है।

अछूत कोई नहीं – दयानन्द की दृष्टि में कोई अछूत न था। उमेदा नाई खाना लाया तो भरी सभा में स्वीकार किया। भक्त की भावना गेहूं के आटे से गुंधी थी, जो भक्त वत्सल की दृ ष्टि में लाख जन्माभिमानों की अपेक्षा अधिक सम्मान के योग्य थी। कसाई (महजबी सिख) को किसी ने व्याख्यान सभा से हटाया। कहा, 'नहीं! मेरा व्याख्यान कसाईयों के लिए है।'

क्या आप जानते हैं कि सबसे पहला मलकाना रूस्तम सिंह किन शुभ कर-कमलों द्वारा पुनीत यज्ञोपवीत से

– शेष पृष्ठ 2 पर

200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव

ऐतिहासिक, अद्भुत, अनुपम और अद्वितीय

10-11-12 फरवरी, 2024 : जन्मभूमि टंकारा, जिला- मौरवी (गुजरात)

चलो टंकारा! ऋषि हमारा - दयानन्द प्यारा - चलो टंकारा - चलो टंकारा चलो टंकारा!!!

रेल से टंकारा पधारने के इच्छुक ध्यान देवें

- निकटतम रेलवे स्टेशन राजकोट है।
- जितनी भी वेटिंग हो टिकट करवा लेवें।
- वेटिंग वाली टिकट की फोटो या PDF 9311413920 पर व्हाट्सएप करें।
- आपकी टिकट को कन्फर्म कराने का प्रयास किया जाएगा।
- राजकोट से टंकारा जाने के लिए सरकारी व प्राइवेट बसें एवं टैक्सी लगातार उपलब्ध रहती हैं।

दिल्ली से टंकारा जाने-आने की हवाई यात्रा का खर्च ₹17500 (प्रति व्यक्ति) है। इच्छुक व्यक्ति नीचे दिए गए बैंक अकाउंट में राशि जमा करवा सकते हैं।

Account Name	: Maharshi Dayanand Saraswati Smarak Trust Tankara
Account Number	: 023694600000822
IFSC Code	: YESB0000236
Bank	: YES Bank

राशि जमा करने के पश्चात् जानकारी श्री सुरेश चंद गुप्ता जी को 8010293949 पर जमा रसीद की फोटो एवं आधार कार्ड की कॉपी व्हाट्सएप करें।

हवाई यात्रा की जानकारी
दिल्ली से राजकोट - 09.02.24 at 15:25
राजकोट से दिल्ली - 12.02.24 at 17:45

राजकोट एयरपोर्ट से टंकारा जाने-आने हेतु बस की व्यवस्था रहेगी जिसका खर्च उपरोक्त ₹17500 में सम्मिलित है।

Limited Seats Available, Last Date for Booking 25 January 2024

स्टाल बुक कराएं

टंकारा में स्मरणोत्सव के अवसर पर साहित्य प्रकाशकों एंव पुस्तक विक्रेताओं हेतु 2100/- रुपये में स्टाल उपलब्ध कराया जाएगा। राशि का चैक **'महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा'** भेजे। स्टाल बुकिंग हेतु राशि निम्नांकित बैंक खाते में जमा कराई जा सकती है -

"Maharshi Dayanand Saraswati Smarak Trust Tankara"
A/c No.: 023694600000822 IFSC code: YESB0000236
YES BANK, Preet Vihar, New Delhi

कृपया अपनी सहयोग राशि 'महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा' के नाम निम्नांकित बैंक खाते में जमा कराकर डिपोजिट स्लिप/ट्रांस्फर मैसेज श्री पन्ना लाल आर्य जी को 95606 88950 पर व्हाट्सएप्प करने की कृपा करें, जिससे आपको रसीद भेजी जा सके।

स्टाल बुकिंग के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए स्टाल व्यवस्थापक श्री संजीव आर्य (9868244958) से सम्पर्क करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में आयोजित

ज्ञान ज्योति यात्रा
विशाल मोटर साइकिल यात्रा
दिल्ली से टंकारा (गुजरात)

मोटर साइकिल द्वारा

यात्रा का आरंभ 6 फरवरी 2024, दिल्ली वापसी 15 फरवरी 2024

दिल्ली से आरंभ होकर हरियाणा, राजस्थान व ऋषि जन्मभूमि टंकारा (गुजरात) जाने वाली इस विशाल मोटरसाइकिल एवं वाहन यात्रा में दिल्ली व उपरोक्त स्थानों के आर्य वीर दल व आर्य समाजों से जुड़े आर्य महानुभाव भी हिस्सा बनें।

आर्य समाजों व हरियाणा, राजस्थान एवं गुजरात के आर्य वीर दल के सदस्य मोटर साइकिल एवं वाहन यात्रा में जाने वाले संपर्क करें- 9990232164

टंकारा निमंत्रण वीडियो प्रतियोगिता

महर्षि दयानन्द के 200वें जन्मदिवस पर दुनिया भर के लोगों को टंकारा आने का निमंत्रण देते हुए अपनी एक वीडियो रिकॉर्ड करके हमें भेजें

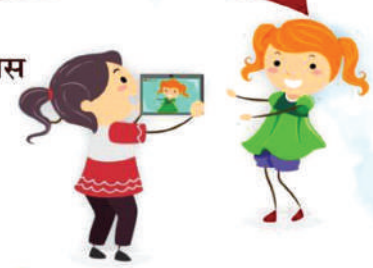

63900-32900 पर WhatsApp करें।
प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए अधिकतम आयु 18 वर्ष है।

वीडियो भेजने की अंतिम तिथि- 21 जनवरी 2024

200वीं जयंती के कार्यक्रमों की तैयारियों के सम्बन्ध में भारत की आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं की

विशाल ऑनलाइन बैठक

शुक्रवार, 26 जनवरी 2024 सायं 4 बजे

QR Code

zoom
Zoom Meeting ID
870 7601 6694
Password - 200200

लिंक - bit.ly/Meet26Jan2024

इन ऐतिहासिक आयोजनों के महत्व को देखते हुए सभी अधिकारी-कार्यकर्ता वर्ग और आर्य जन अवश्य ही बैठक से जुड़ें।

अपने मोबाइल से QR code स्कैन करें। अथवा Zoom app में meeting id और password डालें। अथवा लिंक को chrome आदि browser में खोलें। आपके मोबाइल में Zoom app पहले से इंस्टॉल होना चाहिए।

निवेदक
- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
- श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा
- ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति
- गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

आओ चलें टंकारा – सम्पूर्ण विश्व में गूंजेगा दयानन्द का जयकारा – आओ चलें टंकारा

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में

200 वां जन्मोत्सव–ज्ञान ज्योति पर्व स्मरणोत्सव महासम्मेलन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि, टंकारा, जिला–राजकोट (गुजरात)

10–11–12 फरवरी, 2024 (शनि–रवि–सोम)

माघ, शुक्ल पक्ष १–२–१ वि.२०८०

हम सबके जीवन का ऐतिहासिक अवसर – आइऐ, इस महान अवसर के साक्षी बनें

आर्यजनों, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 200वां जन्मोत्सव एक ऐतिहासिक अवसर है। किसी महापुरुष की जन्म शताब्दी अथवा द्विशताब्दी में सम्मिलित होने का अवसर किसी को भी जीवन में दोबारा प्राप्त होना सम्भव नहीं है। अतः इस अवसर पर आयोजित इस ज्ञान ज्योति पर्व – स्मरणोत्सव महासम्मेलन को भव्य एवं ऐतिहासिक बनाने के लिए समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं, प्रमुख आर्य संगठनों, आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थानों, गुरुकुलों, विद्यालयों, डी.ए.वी. संस्थाओं तथा व्यापारिक एवं औद्योगिक संस्थानों से अनुरोध है कि –

आयोजन की तिथियों 10–11–12 फरवरी में अपना कोई भी बड़ा आयोजन न रखें

समस्त साथियों, अधिकारियों, सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं सहित सपरिवार पहुंचने की तैयारी अभी से आरम्भ करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के स्मरणोत्सव समारोह को सफल बनाने में अहम् भूमिका निभाएं

अपना रेलवे आरक्षण तुरन्त कराएं, चाहे कितनी भी वेटिंग हो। वेटिंग टिकट को 9311413920 पर भेजें, ग्रुप में कन्फर्म कराने का प्रयास किया जाएगा

–: टंकारा पहुंचने हेतु साधन, मार्ग एवं उपलब्ध व्यवस्था/सुविधाएं :–

हवाई मार्ग – टंकारा के निकटतम हवाई अड्डा राजकोट है। राजकोट हवाई अड्डे से टंकारा की दूरी 40 किलोमीटर है। दूसरा निकटतम हवाई अड्डा अहमदाबाद है जहां से टंकारा लगभग 250 किलोमीटर है। देश के लगभग सभी स्थानों / हवाई अड्डों से इन दोनों जगह की कनेक्टिविटी है तथा इन दोनों ही स्थानों से टंकारा पहुंचने का राजमार्ग बहुत अच्छा है। राजकोट का किराया काफी अधिक होगा। अतः अहमदाबाद की टिकट लेकर टैक्सी अथवा डीलक्स बस से पहुंचना भी एक सरल माध्यम हो सकता है।

रेल मार्ग – टंकारा पहुंचने के लिए सबसे निकटवर्ती रेलवे स्टेशन राजकोट ही है। यह स्टेशन टंकारा से 45 कि.मी. की दूरी पर है। यहां से टंकारा के लिए लगातार टैक्सी और सरकारी एवं प्राइवेट बसों की सेवा संचालित हैं। कार्यक्रम के दिनों में हमारा प्रयास होगा कि राजकोट रेलवे स्टेशन से टंकारा आयोजन स्थल तक सरकारी बसों की विशेष व्यवस्था हो जाए, जिससे और भी आसानी रहे। **अतः तुरन्त रेलवे टिकट ले लें, चाहे कितनी ही वेटिंग में मिले। वेटिंग टिकट को 9311413920 पर व्हाट्सएप्प भेजें, कन्फर्म कराने का प्रयास किया जाएगा**

सड़क मार्ग – टंकारा से 500–600 किमी. की दूरी (गुजरात के निकटवर्ती–राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र) में रहने वाले महानुभाव अपनी–अपनी आर्य समाज/संस्था की ओर से बसों की व्यवस्था करके भी सामूहिक यात्रा का आयोजन कर सकते हैं।

भोजन व्यवस्था – टंकारा में आयोजन स्थल पर 9 फरवरी से 12 फरवरी की रात्रि तक भोजन की पर्याप्त व निःशुल्क व्यवस्था रहेगी। जो महानुभाव उसके अतिरिक्त अन्य व्यवस्था लेना चाहें उनके लिए सशुल्क स्टाल भी उपलब्ध होंगे, जिन पर व्यवस्थानुसार भोजन/नाश्ता/फास्टफूड/मिष्ठान/आदि का आनन्द भी लिया जा सकता है।

आवास व्यवस्था – टंकारा जाने वाले समस्त आर्यजनों के लिए आयोजन स्थल के साथ–साथ स्थानीय विद्यालयों, धर्मशालाओं, समाजवाड़ियों (पंचायती विवाह केन्द्र जो बहुत साफ–सुथरे और बेहतर व्यवस्था वाले हैं) में प्रत्येक व्यक्ति के लिए बैडिंग की पूर्णतया निःशुल्क व्यवस्था की जाएगी।

होटल/सशुल्क आवास व्यवस्था – टंकारा में स्थानीय एवं कुछ दूरी पर मोरबी और राजकोट में अच्छी क्वालिटी के होटल हैं। जहां उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार दो व्यक्तियों हेतु रुपये 1500/– से 5000/– रुपये राशि पर कमरे बुक कराए जा सकते हैं। होटल/सशुल्क आवास व्यवस्था प्राप्त करने हेतु **श्री अरुण प्रकाश वर्मा (9810086759)** एवं **श्री सुरेशचन्द्र गुप्ता (8010293949)** से सम्पर्क करें। यदि आप होटल/ सशुल्क व्यवस्था में रहना चाहते हैं तो शीघ्र (आधी राशि) भेजकर होटल के कमरे बुक करवा लें, शेष राशि यात्रा से पूर्व/टंकारा पहुंचते ही अवश्य जमा करा देवें।

गणवेश – सभी आर्यजन सफेद कुर्ता, पजामा–धोती और संतरी पगड़ी या टोपी पहनकर इस महत्वपूर्ण उत्सव के साक्षी बनें। महिलाएं क्रीम या पीली भारतीय परंपरा की साड़ी/वस्त्र धारण करके समारोह की गरिमा/शोभा बढ़ाएं। सम्पूर्ण यात्रा एवं समारोह में टोपी/पगड़ी/पीत–वस्त्र अवश्य ही धारण करके रखें। ओम का बैज या 200वीं जयन्ती के लोगो का बैज अवश्य लगा कर रखें।

मौसम – गुजरात, टंकारा क्षेत्र में इन दिनों मौसम बहुत सुहावना रहेगा। केवल रात्रि में हल्का गर्म स्वेटर आदि की आवश्यकता हो सकती है, अन्यथा दिन में पंखे आदि चलते हैं। तापमान 30 डिग्री और 25 डिग्री के बीच रहेगा।

भ्रमण – टंकारा यात्रा के दौरान जो महानुभाव सम्मिलित होते हैं, वे भ्रमण आदि के लिए भी जाना चाहेंगे तो आसपास दर्शनीय स्थान द्वारका, गिर के वन, स्टैचू आफ यूनिटी, चम्पानेर का किला, साबरमती आश्रम, रानी की वाव, पिरोटन इजलैंड, कच्छ का रण, जरवानी वाटरफाल, सरदार सरोवर डैम, खम्भेलिया केव्ज, रामपारा वाइल्डलाइफ सेंचुअरी हैं। वहां की भ्रमण व्यवस्था किसी ट्रैवल एजेंट से करवाई जा सकती है। आप अपनी यात्रा की ट्रेन आदि की बुकिंग करवाते समय इसका भी विशेष ध्यान रख सकते हैं।

एक अनुरोध – जिस महान आत्मा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती पर हम जा रहे हैं, उन्होंने न जाने कितने कष्ट उठाएं, हमें हमारा आज देने के लिए। अतः यात्रा में कुछ कष्ट सम्भव है, हमारी ओर से पूर्ण व्यवस्थाएं की गई हैं, फिर भी सम्भव है कि कुछ परेशानी या कष्ट हो। स्वयं को इस कार्यक्रम का आयोजक समझकर अपने सहयोगियों के साथ मिलकर व्यवस्थाएं बनाएं, ऐसा हमारा निवेदन है।

–: निवेदक :–

सुरेशचन्द्र आय
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

पद्मश्री पूनम सूरी
प्रधान
डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी

सुरेन्द्र कुमार आर्य
अध्यक्ष, ज्ञान ज्योति महोत्सव
आयोजन समिति

योगेश मुंजाल
कार्यकारी प्रधान
महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती (उडीसा), **धर्मपाल आर्य** (दिल्ली), **सुदर्शन शर्मा** (पंजाब), **राधाकृष्ण आर्य** (हरियाणा), **प्रकाश आर्य** (म. भारत), **वेद प्रकाश गर्ग** (मुम्बई), **किशनलाल गहलौत** (राजस्थान), **सत्यवीर शास्त्री** (विदर्भ), **डॉ. रामकुमार पटेल** (छत्तीसगढ़), **भारतभूषण त्रिपाठी** (झारखण्ड), **योगमुनि** (महाराष्ट्र), **ऋषिमित्र वानप्रस्थी** (कर्नाटक), **जगदीश प्रसाद केडिया** (बंगाल), **संजीव चौरसिया** (बिहार), **महेन्द्र सिंह राजपूत** (असम), **डी.पी. यादव** (उत्तराखण्ड), **प्रबोधचन्द्र सूद** (हिमाचल), **एस. के. शर्मा** (प्रादेशिक), **देवेन्द्रपाल वर्मा** (उ. प्रदेश), **अरुण चौधरी** (जम्मू–कश्मीर), **दीपक ठक्कर** (गुजरात), **सत्यानन्द आर्य** (परोपकारिणी), **अशोक आर्य** (उदयपुर), **गोपाल बाहेती** (अजमेर), **जोगेन्द्र खट्टर** (अ.द.से.संघ), **अजय सहगल** (टंकारा), **देव कुमार** (टंकारा ट्र.), **सुरेन्द्र रैली** (दिल्ली), **सतीश चड्डा** (दिल्ली), **विनय आर्य** (दिल्ली), **वाचोनिधि आर्य** (गुजरात)

ज्ञान ज्योति महोत्सव आयोजन समिति, महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, समस्त प्रमुख आर्य संगठनों एवं प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं में माननीय अधिकारीगण

साप्ताहिक स्वाध्याय

सुधार की मध्यम दशा

गतांक से आगे –

1867 ईसवी के अप्रैल मास में हरिद्वार का कुम्भ था। देशभर के साधु-संन्यासी इस मेले में एकत्र होते हैं। हिन्दू जाति की भलाई और बुराई, सुन्दरता और कुरूपता दोनों का ही स्पष्ट रूप से दिग्दर्शन करना हो, तो दस-पांच दिन इस विख्यात समारोह की सैर कर लेना पर्याप्त है। हिन्दू जाति श्रद्धामयी है। उस श्रद्धा का कुम्भ के मेले में मानो समुद्र उमड़ पड़ता है। जहां एक ओर ऐसे बूढ़े फरुष लाठियां टेककर स्टेशन से धर्मशाला की ओर जाते दिखाई देंगे, जिनकी कमर झुक गई है, दांत मुंह को छोड़ भागे हैं, एक पांव यमपुरी की देहलीज पर धरा जा चुका है, वहां दूसरी ओर दुधमुंहे बच्चे, धूप और प्यास का कष्ट सहन करती हुई असूर्यम्पश्या हिन्दू ललनाओं की गोद में रहकर भारत की माताओं के अतुल विश्वास और तप की सूचना देते हैं। गृहस्थ लोग लाखें की संख्या में एकत्र होकर साधु-सन्तों के दर्शन करते हैं, गंगा के विशुद्ध शीतल जल में स्नान करके अपने को धन्य मानते हैं और अब तक भी हिन्दूपन के जीवित होने की सूचना देते हैं। ऐसे ही मेले भारत की आर्यजाति की मौलिक एकता को सिद्ध करते हैं। भीड़ में दृष्टि उठाकर देखिये-कहीं अनघड़ पंजाबी साफा दिखाई देता है, तो कहीं लखनऊ के शौकीन की दुपल्ली टोपी में से घुंघराले बाल दृष्टिगोचर होते हैं। कहीं मद्रासी के नंगे सिर पर गोखुर से दुगुनी शिख नजर आती है, तो कहीं नाजुक गुजराती नाटे शरीर के शिरोभाग पर लाल पगड़ी सुहाती है। सारांश यह कि भारतभर के हिन्दू निवासी एक डोरी में बंधे हुए हैं-कुम्भ के मेले पर अविश्वासी हृदय भी इस बात पर विश्वास किये बिना न रहेगा।

यह इस तस्वीर का उज्ज्वल पहलू है। अंधेरा पहलू भी कुछ कम गहरा नहीं है। छल-कपट-आलस्य तथा स्वार्थ के शरीर बिना ढूंढे ही मिल जाएंगे। भोगमय त्याग, दुराचारमय साधु-भाव और हृदय का विरोधी रूप आपको पग-पग पर दिखई देगा। जिनके गृहस्थ नहीं हैं, उनके अन्त:फर में फत्र-कलत्र:, जिनकी आमदनी का कोई साधन नहीं है, उनके डेरों पर हाथी और घोड़े और जो त्यागी कहलाते हैं उनके सन्दूकों में लाखों के तोड़े-यह सब-कुछ बिना विशेष यत्न के ही दीख जाएगा। सरलहृदय भक्त और भक्तिनों के विश्वास का घात करनेवाले भगवा वेशधारी मठेश्वर भिन्न-भिन्न उपायों से अपने इन्द्रिय-सुख की साधना में मग्न दिखाई देते हैं। जिसे हिन्दू धर्म की गिरी हुई दशा देखनी हो, वह आंखें खेलकर एक बार हरिद्वार के कुम्भ की सैर कर आवे। जहां एक ओर कुम्भ पर एकत्रित हुआ जन-समूह देशभर के हिन्दुओं की मौलिक एकता को सूचित करता है, वहां साथ ही वह हिन्दुओं की नासमझी और अन्धी श्रद्धा में एकता को भी सूचित करता है।

महर्षि दयानन्द कुम्भ स्नान से एक मास पूर्व ही हरिद्वार पहुंच गए और उन्होंने सप्तस्रोत के पास गंगा की रेती में कुछ छप्पर डालकर मध्य में पाखण्ड-खण्डनी झण्डी गाड़ दी। सप्तस्रोत में खड़े हुए युवा सुधारक के सामने जो परस्पर विरोध उपस्थित हुआ होगा, उसकी कल्पना की जा सकती है। एक ओर संसार में अनूठे हिमालय और भागीरथी का प्राकृतिक चित्र, दूसरी ओर अज्ञान और छल के मानुषिक चमत्कार-क्या यह आश्चर्य और खेद उत्पन्न करनेवाला दृश्य नहीं है? सप्तस्रोत पर खड़े होकर जरा उत्तर की ओर दृष्टि उठाइए। पर्वत के पीछे पर्वत, जंगल के ऊपर जंगल, यही क्रम बराबर चला गया है। यहां तक कि हिमालय की गगनभेदी चोटियां चांदी के सदृश चमकते हुए बर्फ के मुकुट में अन्तर्धान हो गई। इस चांदी का पिघला हुआ प्रवाह घाटियों, कन्दराओं और तलहटियों से होकर हरिद्वार के पास से गुजरता है। जल क्या है, नील मणियों की छवि से प्रतिबिम्बित शुद्धतम

अमृत है, जिसकी शीतलता सोने में सुगन्ध के समान है। एक ओर यह मन और तन को प्रसन्न और उन्नत करनेवाला दृश्य! दूसरी ओर स्वार्थ, अज्ञान और दम्भ की लीला से बिगड़ी हुई मनुष्य-प्रकृति! जिसे परमात्मा ने इतना सुन्दर बनाया है, उसे मनुष्य ने कितना बिगाड़ दिया है! जिसे मनुष्य नहीं बिगाड़ सका, वही सुन्दर है। ईश्वरीय सुन्दरता और मानवीय नीचता के दृश्य देख्कर यदि युवक महर्षि दयानन्द के हृदय में एक उग्र ज्वाला न भड़क उठती तो नि:सन्देह वह पाषाणमय सिद्ध होता।

– क्रमश:

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुन:प्रकाशित
जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार
पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर
अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

Continue From Last Issue

Roar of Lion on Bank of Ganga

(From 1867-1869 A.D)

Having seen no effect of the letter, Brahmans, and Tantriks sent for Pandit Haldhar Ojha from Kanpur. He was a well known Pandit of Vyakran. But he did not have proper knowledge about Dharam. Topic of debate was fixed, but Panditji tried to drag into the topic regarding Sanskrit. He did not know that Swamiji was expert in Sanskrit. So, he was defeated. All the Pandits present there accepted that Ojha had been defeated. Then Swamiji's name earned more fame. Many rich persons who had become devotee of swamiji established a Pathshala (School) for studies of Ved-Vedang in Farrukhabad. People last faith in Idol worship, Shraadh of dead ones etc. Young boys of school started reciting the shlokas etc heard from Swamiji in streets and Mohallas and upset the Brahman Gurus.

Travelling on different places in Farrukhabad Swamiji reached Kanpur and made his seat on bank of Ganga. As the bees thirsty for honey come from far and wide around flowers, similarly curious people of that period of reform gathered around Swamiji for quenching thirst for Dharm. There was great confusion in Pauranik group. Rich persons gathered Pandits after spending a lot of money. Having been defeated in Farrukhabad Pandit Haldhar Ojha also reached there with a group of Pandits. There was a great gathering of Pandits. Bhairav ghat was packed with people. Mr. W. Thein, the Joint Magistrate of Kanpur was presiding the function. Debate was held between swamiji and Pandit Haldher in the presence of about 50,000 persons.

The topic of debate was 'Idol worship' Pandit Haldhar recited some Shlokas from 'Maha Bharat Granth' and said that a Bheel had prepared idol of Dronacharya. Then Swamiji argued that he (Bheel) was not expert Rishi of Vedas. He was quite illiterate. His action can not be a proof and ideal for all. The debate went on like this. At last the Presiding officer was sure that Swamiji's arguments were correct and Haldhar was just passing time. He declared Swamiji's victory and went out. Just after the President left, there was heard 'Sanatan Dharm ki Jai'. After some days Mr. Thein gave written letter to some persons. It was stated "I gave decision in favour of Faquir Dayanand. I am sure his statements were according toVedas"

Fight Against the Garh

(Strong Base)

Anand Bagh of King Madho Singh is famous in Banaras. There was a great hustle and bustle in the garden on Kartik Shudi 12 of Samvat 1926. A few days 0go a Sanyasi wearing Langot (underwear) only stayed in the garden. All the famous Pandits of Kashi started coming to him for testing their power. Swami Dayanand came from Rajpur on 22nd October, 1869 and stayed in that garden. There was a great movement in the city after he came to that garden. Dayanand, who was a great reformer and believed in complete independance in field of wisdom and Dharm, had entered the field of war. He believed in only one Parmeshwar (God) as his helper. He felt that Banares was a strong Fort of misbelief and believer of following the tradition given to them by their ancestors. Dayanand had come to finish wrong belief and tradition. Kashi had been considered strong of Vidya and wisdom since olden times. Many Maha Mahopadhyays lived in various streets of Kashi. Swami Dayanand wanted to remove bad traditions and beliefs from the city. Pauranik Dharm could not be declared defeated until Kashi was defeated. Pandits who were defeated in other cities, moved towards Kashi. Some talked about Swami Vishudhanand's views, some others mentioned name of Pandit Raja Ram Shastri to make the opponent feel afraid. The 'Lion - Dayanand' decided to enter the cave and challenge the lion's that is he reached Kashi. He stayed in Madho Garden and challenged all hoisting his Dharm Flag.

To be Continue.....

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की

200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव

10-11-12 फरवरी, 2024 : जन्मभूमि टंकारा, मौरवी (गुजरात)

आर्यसमाज मन्दिरों एवं संस्थाओं से विशेष निवेदन

समस्त आर्यसमाजें, गुरुकुल, विद्यालय एवं आर्य संस्थाएं स्मरणोत्सव की तिथियों 10-11-12 फरवरी, 2024 में अपना कोई भी बड़ा आयोजन न रखें

आर्यसमाज मन्दिरों, संस्थाओं एवं घरों की साज-सज्जा करें

1 फरवरी से अपने आर्य समाज मन्दिरों, संस्थाओं और घरों की विशेष सज्जा करें, लाइटों, लड़ियों आदि से और सज्जा ऐसे भी करें जो दिन में भी दिखाई दे।

अपने नाम एवं फोटो के साथ होर्डिंग/बैनर लगवाएं

समस्त आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थान, विद्यालय, गुरुकुल/संस्थाओं के अधिकारीगण अपने नाम एवं फोटो के साथ अधिकाधिक होर्डिंग/बैनर क्षेत्र में लगवाएं, जिससे आर्यसमाज के साथ-साथ उनकी भी जान-पहचान बन सके।

प्रमुख स्थानों पर पर्मानैंट होर्डिंग लगवाएं

अपने क्षेत्र के स्थानीय नेताओं, निगम पार्षदों, स्थानीय विधायकों एवं सांसद के साथ स्थानीय पार्टियों के जिलाध्यक्ष, मंडलपति आदि से सम्पर्क करके उनके फोटो के साथ 200वीं जयन्ती के शुभकामना होर्डिंग/बैनर प्रमुख चौक/बाजार आदि स्थानों पर लगवाएं।

व्यक्तिगत रूप से हम क्या करें

समस्त आर्यजन अपने घरों पर ओ३म् ध्वज, 200वीं जयन्ती का शुभकामना बैनर लागाएं। जन्मोत्सव के दिन सामर्थ्यानुसार पास-पड़ोस में मिष्ठान/प्रसाद वितरण करें और सोशल मीडिया पर बधाई सन्देश भेजें **# दयानन्द 200** पर टैग करें।

जो टंकारा नहीं पहुंच पा रहे

जिन आर्यसमाजों/विद्यालयों/ संस्थानों के अधिकारी/ कार्यकर्ता/ सदस्यगण/परिवार टंकारा के आयोजन में नहीं पहुंच पा रहे। 10, 11 एवं 12 फरवरी का सम्पूर्ण आयोजन आर्यसन्देश टीवी पर लाईव देखें और जनसामान्य को दिखाने के लिए स्क्रीन आदि की व्यवस्था करें।

वैदिक साहित्य प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता स्टाल बुक कराएं

जो प्रकाशक अथवा पुस्तक विक्रेता अपने स्टाल टंकारा में लगाना चाहें वे अपना स्टाल तत्काल बुक कराएं। स्टालों की संख्या सीमित है। स्टाल 2100/- रुपये में उपलब्ध कराया जाएगा। बुकिंग हेतु चैक **'महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा'** भेजे। अधिक जानकारी के लिए व्यवस्थापक **श्री संजीव आर्य (9868244958)** से सम्पर्क करें।

टंकारा पहुंचने वाले आर्य संगठन एवं आर्यजन पंजीकरण कराएं

200वीं जयन्ती-ज्ञान ज्योति पर्व-स्मरणोत्सव, टंकारा में सम्मिलित होने वाले प्रत्येक आर्य महानुभाव अनिवार्य रूप से रजिस्ट्रेशन कराकर व्यवस्थाओं में सहयोगी बनें। रजिस्ट्रेशन के लिए लॉगइन करें - **www.thearyasamaj.org**

रेल टिकट वेटिंग में हो तो

जो महानुभाव रेल मार्ग से टंकारा जाना चाह रहे हैं वे अपना रेलवे आरक्षण राजकोट के लिए तुरन्त करा लें। चाहे टिकट वेटिंग मिले या कन्फर्म। यदि **टिकट वेटिंग हो तो 9311413920 पर व्हाट्सएप्प भेज दें।** अधिक जानकारी के लिए **श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता जी 8010293949** से सम्पर्क करें

व्यवसायी महानुभाव एवं उद्योगपति

अपने प्रतिष्ठानों के कर्मचारियों-सहयोगियों के साथ यज्ञ करें। कर्मचारियों

समस्त आर्यसमाज, प्रान्तीय सभाएं, गुरुकुल, विद्यालय, शिक्षण संस्थान 200वीं जयन्ती के अवसर पर 5 मार्च से 8 मार्च की तिथियों को लेकर करें

ज्ञान ज्योति सप्ताह का आयोजन

ऋषि जन्मभूमि टंकारा में होने वाला स्मरणोत्सव एक विराट सामूहिक आयोजन है जोकि 10-11-12 फरवरी को आयोजित किया जा रहा है। विश्व के समस्त आर्यसमाज स्थानीय एवं प्रान्तीय स्तर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मदिवस फाल्गुन कृष्ण 10 (दयानन्द दशमी) से ऋषि बोध दिवस (शिवरात्रि) फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी तद्नुसार 5 मार्च, 2024 से 8 मार्च, 2024 तक 200वीं जयन्ती - ज्ञान ज्योति सप्ताह का आयोजन इन तिथियों को बीच में लेकर करें। इस अवसर पर प्रत्येक आर्यसमाज क्षेत्रीय स्तर पर प्रभातफेरी, शोभायात्रा निकाले, प्रसाद वितरण करें, साहित्य बांटे, विभिन्न गोष्ठियों, कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं के साथ-साथ कोई न कोई सेवा कार्य भी अवश्य ही आयोजित करें। अपने कार्यक्रमों में 200वें जन्मोत्सव की शुभकामनाओं के साथ निम्न बिन्दुओं को भी सम्मिलित करें -

1. रिश्ते बचाइए - देश बचाइए
2. गले लगाइए - दूरी मिटाइए
3. प्राकृतिक कृषि अपनाइए - जल-जमीन-स्वास्थ्य बचाइए
4. नशा भगाइए - यौवन बचाइए

को मिठाई, वैदिक साहित्य की कोई पुस्तक, ईनाम के रूप में 200वीं जयन्ती का सिक्का अथवा अन्य कुछ अवश्य ही वितरित करें।

व्यवसायी वर्ग यदि इस अवसर पर कोई भी किसी भी प्रकार की स्कीम दे सकें तो अवश्य दें। किसी भी सामान/खरीद पर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जयन्ती से सम्बन्धित कुछ उपहार/छूट अवश्य देने का प्रयास करें।

व्यवस्थाओं की सफलता हेतु आपका सहयोग

इस 200वें स्मरणोत्सव की विशाला व्यवस्थाओं के लिए आपका आर्थिक सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: आपसे निवेदन है कि आप अपने आर्यसमाज/संस्थान एवं परिवार की ओर से कुछ-न-कुछ सहयोग राशि प्रदान करने की कृपा करें और आर्यसमाज के सदस्यों, परिचितों, इष्ट मित्रों को भी सहयोग करने की प्रेरणा करें।अत: कृपया अपनी सहयोग राशि **'महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा'** के नाम निम्नांकित बैंक खाते में जमा कराकर डिपोजिट स्लिप/ट्रांस्फर मैसेज श्री पन्ना लाल आर्य जी को 95606 88950 पर व्हाट्सएप्प करने की कृपा करें, जिससे आपको रसीद भेजी जा सके। ट्रस्ट को दिया दान आयकर मुक्त है।

"Maharshi Dayanand Saraswati Smarak Trust Tankara"
A/c No.: 023694600000822 IFSC code: YESB0000236
YES BANK, Preet Vihar, New Delhi

महर्षि दयानन्द की 200वीं जयन्ती पर अमेरिका में आर्य महासम्मेलन

200 YEARS OF MAHARSHI DAYANAND BIRTH
150 YEARS OF ARYA SAMAJ FOUNDATION

INTERNATIONAL ARYA MAHASAMMELAN
(Largest Global Summit of Arya Samaj Ever, outside India)

HOSTED BY ARYA SAMAJS OF TRI-STATE OF NEW YORK, NEW JERSEY AND CONNECTICUT

July 18-21, 2024 | New York

महासम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक समस्त महानुभाव तत्काल रजिस्ट्रेशन कराएं
https://tinyurl.com/iams2024ny

पंजीकरण या अन्य किसी प्रकार की जानकारी/समस्या के समाधान हेतु सम्पर्क करें

भारत से जाने वाले
9650183339 अथवा 9311721172

भारत के अतिरक्त अन्य देशों से जाने वाले
iams2024@aryasamaj.com

STAY TUNED FOR MORE INFORMATION : www.aryasamaj.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 15 जनवरी, 2024 से रविवार 21 जनवरी, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 18-19-20/01/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 17 जनवरी, 2024

आयोध्या में मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम मन्दिर का उद्घाटन

सोमवार 22 जनवरी, 2024 के अवसर पर

सभी आर्यसमाज, गुरुकुल, शिक्षण संस्थान एवं आर्यजन करें

दीपमाला एवं विशेष यज्ञ-भजन-प्रवचन

भारतीय वैदिक संस्कृति के शिखर पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जीवन सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणाओं का स्तम्भ है। 500 वर्षों से अधिक कालखण्ड के उपरान्त उनकी जन्मभूमि अयोध्या में भव्य और विशाल स्मारक (श्रीराम मन्दिर) का उद्घाटन समारोह 22 जनवरी, 2024 को माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा होना सुनिश्चित है। इस अवसर पर समस्त आर्यसमाजों, गुरुकुलों, शिक्षण संस्थाओं एवं आर्य से अनुरोध है कि अपने परिवारों एवं संस्थानों में यज्ञ, भजन और प्रवचनों के विशेष आयोजन करें। अपने संस्थानों और घरों को लाइटों एवं दीपमालाओं से सजाएं और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंगों से मानव समाज को अवगत कराने का प्रयास किया जाए।

सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मपाल आर्य, प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रतिष्ठा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती के अवसर

MMTC द्वारा शुद्ध चांदी के विशेष सिक्के
999.9 टंच 10 ग्राम MMTC के प्रमाणपत्र सहित
आकर्षक पैकिंग में उपलब्ध

~~2200~~
रु. 1100/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
9650183336, 9540040339

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर शुभकामनाओं के बैनर अपने घर, आर्य समाज और क्षेत्र में अच्छे स्थानों पर लगवायें

साइज 3 x 2 फुट

मूल्य ₹250 में 25 बैनर

वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली
www.vedicprakashan.com / +91-9540040339

वर्ष 2024 का कैलेण्डर प्रकाशित

1200/-रुपये सैंकड़ा

100 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है।

- प्रकाशन विभाग, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.) मो. - 9540040339

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह